ओ३म्

देहरादून। दिनांकः 10 अक्तूबर, 2014

प्रैस समाचार / विज्ञप्ति

––वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के शरदुत्सव का तीसरा दिन ––

'जो गऊ को धारण करता है वह गन्धर्व कहलाता हैः नन्दिता शास्त्री'

देहरादून 10 अक्तूबर। आर्यजगत की सुप्रसिद्ध वेद विदुषी आचार्या डा. नन्दिता शास्त्री ने कहा कि गन्धर्व कोई योनि विशेष नहीं होती अपितु जो गऊ को धारण करता है उसे गन्धर्व कहते हैं। आचार्या नन्दिता शास्त्री आज

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के 5 दिवसीय वार्षिकोत्सव के तीसरे दिन के प्रथम सत्र में वेद प्रवचन कर रही थीं। उन्होंने वेदों में गन्धर्व शब्द के यौगिक अर्थ पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पृथिवी को धारण करने वाले पृथिवीपति अर्थात् राजा को भी गन्धर्व कहा जाता है। उन्होंने कहा कि वेदवाणी को धारण करने वाला ब्राह्मण होता और वह भी गन्धर्व होता है। गऊ एक पशु है, इस कारण पशु पालन करने वाला वैश्य भी गन्धर्व है। उन्होंने आगे बताया कि शूद्र के सेवाभावी होने और शीघ्रता से कार्यों को करने से वह भी गन्धर्व उपाधि को प्राप्त है। उन्होंने गन्धर्व के अन्य अर्थ बताते हुए कहा कि अग्नि, वायु और सूर्य भी गन्धर्व के अन्तर्गत आते हैं और प्रसंगानुसार इनका अर्थ लिया जाता है। विदुषी आचार्या ने देवयज्ञ की चर्चा की और बताया कि वेदों के अनुसार देवों की संख्या 1339 है। इनका वर्गीकरण कर इन्हें 3 देवों में समाहित किया गया है। आचार्याजी ने कहा कि सब देवों का देव महादेव एक परमात्मा है। उसी ने इस सारी सृष्टि को धारण किया हुआ है। उन्होंने कहा कि अग्नि व सूर्य आदि से उसी का स्तवन हो रहा है। वेदाचार्या नन्दिता शास्त्री ने धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं को वेदों का स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते हुए अपने विद्वतापूर्ण वक्तव्य को विराम दिया।

अमृतसर से पधारे सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं गीतकार श्री दिनेश पथिक ने अपने पिता प्रसिद्ध गीतकार पं. सतपाल पथिक रचित अनेक भजन संगीत यन्त्रों के साथ गाकर प्रस्तुत किये। उनका पहला भजन था – **''जन्म दिन आज फिर आया, बधाई हो बधाई हो, खुशी का रंग है छाया, बधाई हो बधाई हो।''** उन्होंने दूसरा भजन आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रस्तुत किया जिसके बोल थे – **''ऋषि की कहानी सितारों से पूछों, फिजाओं से पूछों, बहारों से पूछों। वो घर से निकल कर किधर खो गया था। महादेव खोजा कि ,खुद खो गया था। सुहाने सफर के नजारों से पूछों। ऋषि की कहानी सितारों से पूछों।''** इस के अतिरिक्त

उन्होंने अन्य दो भजन प्रस्तुत किए जिसमें एक पंजाबी भाषा का था। यह चारों प्रस्तुतियां इतनी मनोहर थी कि सभी श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। आयोजन के संचालक उत्तम मुनि ने श्री दिनेश पथिक के भजनों की सराहना करते हुए उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। प्रातःकाल 5 बजे से साधकों को **स्वामी दिव्यानन्द जी** ने योग साधना व ध्यान का

अभ्यास कराया। उन्होंने सभी साधकों और याज्ञिक यजमानों को आशीवाद देते हुए कहा कि सभी आपस में प्रेम का व्यवहार करें। उन्होंने आगे कहा कि इससे व यज्ञ करने से मनुष्य की आयु बढ़ती है और स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

इसके बाद सभी श्रोतागण आश्रम से 4 किमी. दूरी पर सुरम्य व शान्त पहाड़ियों में स्थित आश्रम की पर्वतीय शाखा पहुंचे जहां वनों से आच्छादित शान्त वातावरण में सत्संग हुआ। श्री उम्मेद सिंह विशारद ने भजन गाया। डा. विनोद कुमार शर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमें विचार करना चाहिये कि हम क्या थे, क्या हो गये हैं और आगे हमारी पीढ़ी का क्या होगा? उन्होंने कहा की आज का समाज देख कर पीड़ा होती है। क्या हम अपने मन–वचन व कर्म के अनुसार जीवन जीते हैं या इससे भिन्न जीवन जीते हैं? हम साधना के स्तर पर कैसे पहुंचेंगे? उन्होंने कहा कि जब तक हम छोटी–2 बातों को ठीक से नहीं करेंगे तो हम अपने जीवन को सफल नहीं कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमें अपना आचरण ठीक करना होगा। श्री शर्मा ने समाज में युवा युवतियों में बढ़ रही अश्लीलता, नग्नता और नशे की आदत की चर्चा कर दुःख व्यक्त किया और इस पर आन्दोलन करने पर बल दिया। इनके पश्चात श्री दिनेश पथिक ने **''सूरज बन दूर किया जिसने पापों का घोर अन्धेरा, वो देव दयानन्द मेरा''** प्रसिद्ध

गीत प्रस्तुत किया। वैदिक साधन आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा ने कहा कि महर्षि दयानन्द संसार के सभी महापुरूषों में सबसे निराले महापुरूष थे। उन्होंने जो कार्य किये वह सब अपूर्व कार्य हैं जिन्हें उनरसे पूर्व किसी महापुरूष ने नहीं किया। आपने आश्रम में एक चिकित्सालय के निर्माण हेतु श्री रामभज मदान एवं आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री द्वारा दान में लाखों रूपये की धनराशि दएि जाने से परिचित कराया। आपने बताया कि यह आश्रम बावा गुरूमुख सिंह द्वारा सन् 1949 में आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी की प्ररेणा से स्थापित किया था। उन्होंने कहा कि अतीत में यहां महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती, महात्मा प्रभु आश्रित जी, महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी तथा स्वामी चित्तेश्वरानन्द आदि ने तपस्या कर इस स्थान को साधना के लिए सर्वोत्तम स्थान पाया है। आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री ने भी आश्रम के अतीत का इतिहास प्रस्तुत करने के साथ अनेक उपयोगी जानकारियां दीं। इन के बाद वाराणसी गुरूकुल की आचार्या प्रियंका शास्त्री और उनकी छात्राओं ने **'बड़ी निराली शान वेदावालियां दीं'** पंजाबी भजन प्रस्तुत किया। आयोजन में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री एम.एम. बजाज भी पधारे थे। उन्होंने अपनी वैज्ञानिक थ्योरी कि भूकम्प आदि आपदाओं के आने का कारण पशु हत्या है, पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय भाषण स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने देते हुए बताया कि हम जहां बैठे हैं यह धार्मिक स्थान है जो योग व ध्यान साधना का देश का सर्वोत्तम स्थान है। अतीत में यहां स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती, महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती, प्रभु आश्रित जी महाराज आदि ने योग साधना करके आत्म कल्याण किया है और यह देश विदेश में चर्चित व विख्यात हुए हैं। उन्होंने दार्शनिक दृष्टिकोण से कहा कि यहां उपस्थित वृक्ष हमसे कह रहे हैं कि हमारी तरह से आप भी मौन व शान्त रह कर देखों, तुम्हें अचिन्त्य लाभ होगा। उन्होंने कहा कि इस स्थान की महत्ता यहां की शान्ति है। हमें भी यहां आकर पूर्ण शान्त रहकर स्वयं को निर्विषय करना चाहिये। आपने बताया कि शास्त्रों में कहा गया है कि नदियों के संगम पर तथा पहाड़ियों की तलहटी में रहकर जो मनुष्य ध्यान करता है उसकी बुद्धि का विकास होता है। उन्होंने कहा कि यहां के वातावरण में जो शान्ति है वह घर के वातावरण में नहीं मिलती। यहां न टीवी है, न रेडियो और न ही तनाव पैदा करने की सामग्री व बातें। उन्होंने आगे कहा कि यहां साधक और ध्यानी जन अलग अलग पेड़ों के नीचे बैठ कर मौन साधना करके आत्म कल्याण का लाभ प्राप्त करते हैं। आज के आयोजन में 150 से अधिक लोगों द्वारा यहां आंखे बन्द कर और काफी समय तक पूर्ण मौन रख कर ओउम् का जप आदि साधना की गई जिससे मन की शान्ति का लाभ सबको मिला। शान्तिपाठ के साथ आज का पूर्वान्ह का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

– इं. प्रेम प्रकाश शर्मा, महामंत्री / मन मोहन कुमार आर्य
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून।